सूरह — एक कहानी

सूरह अल-हुमज़ा

ताना देने वाला

पूरा सफ़र — ज़ुबान, दौलत, और चूर करने वाली आग —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 104 • 9 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

वैलुल्-लि-कुल्लि हुमज़तिल्-लुमज़ह

1. ख़राबी है हर उस शख़्स के लिए जो पीठ पीछे और मुँह पर ताने देता है।

अल्लज़ी ज-म-'अ मालंव्-व 'अद्दद्ह

2. जिसने माल जमा किया और उसे गिन गिन कर रखा।

यह्सबु अन्न मालहू अख़्ल-दह

3. वो समझता है कि उसका माल उसे हमेशा रखेगा।

कल्ला ल-युम्बज़न्न फ़िल्-हुतमह

4. हरगिज़ नहीं! वो ज़रूर हुतमा में फेंका जाएगा।

नारुल्-लाहिल्-मूक़दह

6. अल्लाह की भड़काई हुई आग।

अल्लती तत्तलि'उ 'अलल्-अफ़्इदह

7. जो दिलों तक चढ़ जाएगी।

एक ज़हर, दो लफ़्ज़

बेटा, यह सूरह एक ऐसे गुनाह की तंबीह से शुरू होती है जिसे अक्सर लोग गुनाह शुमार ही नहीं करते: 'वैलुल्-लि-कुल्लि हुमज़तिल्-लुमज़ह — ख़राबी है हर हुमज़ा, लुमज़ा के लिए।'

दो लफ़्ज़, बेटा, और उलमा ने इनकी तशरीह एक दूसरे को पूरा करते हुए की है। 'हुमज़ा' — वो जो पीठ पीछे ग़ीबत करे, लोगों की धज्जियाँ उड़ाए, और आँखों या हाथों के इशारों से उन्हें हक़ीर करे। 'लुमज़ा' — वो जो मुँह पर ताने दे, ऐब निकाले, जिसके पास हर शख़्स के लिए एक फब्ती या एक तंज़ तैयार रहता हो।

और बेटा, दोनों लफ़्ज़ अरबी में मुबालग़े के सीग़े में हैं — यानी यह वो शख़्स नहीं जिससे एक बार फिसलन हुई। यह वो है जिसके लिए मज़ाक़ उड़ाना आदत बन चुका है, शख़्सियत बन चुका है, तफ़रीह का ज़रिया बन चुका है। वो आदमी जो कोई गुफ़्तगू

बग़ैर एक काटने वाले जुमले के गुज़रने नहीं देता। जिसका मज़ाह हमेशा किसी के ख़र्चे पर होता है।

और ग़ौर कीजिए: 'लि-कुल्लि हुमज़तिन लुमज़ह' — हर ऐसे शख़्स के लिए। उलमा ज़िक्र करते हैं कि यह सूरह मक्का के उन मख़्सूस लोगों के बारे में नाज़िल हुई जो नबी ﷺ का मज़ाक़ उड़ाते थे। मगर अल्लाह ने अल्फ़ाज़ आम रखे, ताकि यह हर उस शख़्स पर उतरें जिसमें यही बीमारी हो, किसी भी सदी में।

बेटा, इस बात की संगीनी पर रुक जाइए। 'वैलुन' — ख़राबी, हलाकत — आसमान से एलान किया गया एक ऐसे शख़्स के लिए जिसका जुर्म उसकी ज़ुबान और उसकी आँखें हैं। न कोई ख़ून बहा, न कोई माल चुराया गया। और फिर भी आगे आने वाली आयतें एक ऐसी आग बयान करती हैं जो चूर कर देती है।

और इससे हमें अंदाज़ा होना चाहिए कि अल्लाह इंसान की इज़्ज़त को कितना भारी तोलते हैं। उनके हाँ किसी इंसान की आबरू कोई मामूली चीज़ नहीं जिसे किसी के लतीफ़ों का माल बना लिया जाए।

जमा करना और गिनना

'अल्लज़ी ज-म-'अ मालंव्-व 'अद्दद — जिसने माल जमा किया और उसे बार बार गिना।'

बेटा, अल्लाह ताना देने वाले को पैसा गिनने वाले से क्यों जोड़ते हैं? क्योंकि अक्सर यह एक ही शख़्स होता है, और यह रिश्ता गहरा है।

दोनों अफ़आल देखिए: 'जम-अ' — उसने जमा किया — और "अद्दद' — उसने उसे बार बार गिना। बेटा, उस आदमी का तसव्वुर कीजिए जो रात को अकेला अपने हिसाब के साथ बैठा है, हिसाब लगाता है, फिर लगाता है, एक अदद को बढ़ता हुआ देखता है। न ख़र्च कर रहा है, न इस्तेमाल, न दे रहा है — गिन रहा है।

और इससे आदमी का क्या बनता है? इससे उसे एक तराज़ू मिल जाती है। जब एक बार दौलत क़ीमत का पैमाना बन जाए, तो जो भी शख़्स मिलता है फ़ौरन तुल जाता है

— और ज़्यादातर अपने से हल्के निकलते हैं। बेटा, ताने वहीं से आते हैं। वो दूसरों को हक़ीर इसलिए समझता है कि उसने ख़ामोशी से ख़ुद को मेयार मुक़र्रर कर लिया है।

'यह्सबु अन्न मालहू अख़्ल-दह — वो समझता है कि उसका माल उसे हमेशा रखेगा।'

बेटा, ग़ौर कीजिए अल्लाह यह नहीं कहते कि वो यह अक़ीदा रखता है कि वो हमेशा जिएगा — कोई होशमंद यह ज़ुबान से नहीं कहता। वो कहते हैं 'यह्सबु' — वो हिसाब लगाता है, फ़र्ज़ कर लेता है, इस तरह रहता है गोया। यह बोला हुआ अक़ीदा नहीं; यह अन-कहा अक़ीदा है, जो उसके तर्ज़-ए-ज़िंदगी में नज़र आता है।

और बेटा, हम सब यह रवैया जानते हैं। वो आदमी जो तीस साल आगे का मंसूबा बनाता है और आख़िरत के लिए एक घंटा नहीं निकाल सकता। वो जो अपनी हर चीज़ का बीमा कराता है और अपनी क़ब्र के लिए कोई तैयारी नहीं रखता। वो जो तौबा के बारे में 'बाद में, बाद में' कहता है गोया 'बाद में' उसके नाम लिखा हो।

और हक़ीक़त यह है, बेटा, कि दौलत हमेशा रहने के सबसे बड़े धोकों में से है: यह इंसान को महफ़ूज़ महसूस कराती है — भूख से, बीमारी से, बे-इज़्ज़ती से, मोहताजी से। और फिर आहिस्ता आहिस्ता, बग़ैर कभी वो ख़याल सोचे, वो हर चीज़ से महफ़ूज़ महसूस करने लगता है।

चूर करने वाली

और फिर जवाब: 'कल्ला — हरगिज़ नहीं! ल-युम्बज़न्न फ़िल्-हुतमह — वो ज़रूर हुतमा में फेंका जाएगा।'

बेटा, लफ़्ज़ 'युम्बज़न्न' देखिए — 'नब्ज़' से, यानी फेंक दिया जाना, रद्द कर दिया जाना, किसी बे-क़ीमत चीज़ की तरह उड़ा दिया जाना। जिस शख़्स ने अपनी ज़िंदगी दूसरों को अपने से कमतर कह कर गुज़ारी, वो ख़ुद फेंक दिया जाएगा।

और उसकी मंज़िल का नाम: 'अल-हुतमा' — 'हत्म' से, यानी चूर करना, रेज़ा रेज़ा कर देना, तोड़ देना। चूर करने वाली।

बेटा, मुताबिक़त बिल्कुल ठीक है। उसने अपनी ज़ुबान से लोगों की आबरू चूर की;

उसे चूर करने वाली में डाला जा रहा है। उसने तफ़रीह के लिए लोगों को तोड़ा; जो आग उसे ले रही है उसका नाम ही तोड़ने पर है।

'व मा अद्राक मल्-हुतमह — और आपको क्या मालूम कि चूर करने वाली क्या है? नारुल्लाहिल्-मूक़दह — अल्लाह की भड़काई हुई आग।'

बेटा, ग़ौर कीजिए: 'अल्लाह की आग'। हर वो आग जो हम जानते हैं एक आम, मख़लूक़ चीज़ है — एक माचिस, एक भट्टी, एक जलता हुआ जंगल। यह सीधी उनकी तरफ़ मंसूब की गई है, ताकि उसकी वुसअत का अंदाज़ा हो जो किसी मुक़ाबले में नहीं आती।

'अल्लती तत्तलि'उ 'अलल्-अफ़्इदह — जो दिलों तक चढ़ जाती है।'

बेटा, यही वो आयत है जिसे आपको रोक देना चाहिए। आम आग खाल जलाती है — बाहर वाला हिस्सा। यह आग ऐसी बयान की गई है कि वो चढ़ती है और अफ़इदा तक पहुँचती है, दिलों तक, इंसान के सबसे अंदर वाले हिस्से तक।

और ख़ास तौर पर दिल क्यों? क्योंकि जुर्म वहीं पैदा हुआ था। ताने मुँह से निकले, मगर उनकी इब्तिदा उस दिल से हुई जो हक़ारत से भरा था। गिनती हाथों से हुई, मगर माल की मोहब्बत दिल में बैठी थी। तो सज़ा को ठीक उस हिस्से तक पहुँचते हुए बयान किया गया जिसने गुनाह पैदा किया।

बेटा, यही अल्लाह के इंसाफ़ की बारीकी है: वो सिर्फ़ अमल की सज़ा नहीं देता, वो उसके सरचश्मे को पकड़ता है।

बंद कर दी गई, लंबे सुतूनों में

और सूरह दो ऐसी आयतों पर ख़त्म होती है जो एक दरवाज़े के बंद होने का मंज़र दिखाती हैं: 'इन्नहा 'अलैहिम मूसदह — बेशक वो उन पर बंद कर दी जाएगी — फ़ी 'अमदिम्-मुमद्दह — लंबे सुतूनों में।'

बेटा, 'मूसदह' का मतलब है बंद, मुक़फ़्फ़ल, सील शुदा — जिस तरह कोई दरवाज़ा बाहर से बंद कर के ताला लगा दिया जाए और कोई अंदर रह जाए। और "अमदिम्-

मुमद्ददह' — फैले हुए सुतून; उलमा बयान करते हैं कि उन पर लंबे सुतून होंगे जो दरवाज़ों को जमा देंगे, ताकि निकलने की कोई सूरत न रहे।

बेटा, इस सूरह के इख़्तिताम को महसूस कीजिए, और उस आदमी की ज़िंदगी से मिलाइए। वो फैलाव के साथ जिया: और जमा करना, और गिनना, खुल कर मज़ाक़ उड़ाना, हर महफ़िल में दूसरों के बारे में अपनी रायों से जगह घेरना। और सूरह उसका अंजाम एक बंद जगह में दिखाती है, लंबे सुतूनों के नीचे दबे हुए, जहाँ बिल्कुल जगह नहीं।

अब अमली सबक़ ले लीजिए, बेटा, क्योंकि यह सूरह उस गुनाह के बारे में है जो हर घर और हर दफ़्तर में मौजूद है।

पहला — ज़ुबान की हिफ़ाज़त कीजिए। नबी ﷺ ने फ़रमाया कि बंदा एक ऐसा लफ़्ज़ बोल देता है जिसे वो कुछ नहीं समझता, और वो उसे जहन्नम में मशरिक़-ओ-मग़रिब के फ़ासले से भी ज़्यादा गिरा देता है। और आप ﷺ ने ग़ीबत की तारीफ़ बिल्कुल सादा की: अपने भाई का ऐसे ज़िक्र करना जो उसे नागवार हो। पूछा गया: और अगर वो बात सच हो? आप ﷺ ने फ़रमाया: अगर सच है तो यही तो ग़ीबत है; और अगर सच नहीं है तो तुमने उस पर बोहतान बाँधा।

दूसरा — उस मज़ाक़ से बचिए जो किसी की इज़्ज़त की क़ीमत पर हो। बेटा, इस गुनाह की सबसे मुआशरती तौर पर क़ुबूल शुदा शक्ल लतीफ़ा है। सब हँसते हैं; कोई ए'तिराज़ नहीं करता; जिसका ज़िक्र हो रहा है वो कमरे में मौजूद नहीं। और पहली ही आयत इसी का नाम ले रही है।

तीसरा — देखते रहिए कि आपकी दौलत आपकी आँखों के साथ क्या कर रही है। अगर ज़्यादा होने से आपको लोग छोटे नज़र आने लगे हैं, तो पैसा आपको पहले ही नुक़सान पहुँचा चुका है, चाहे बैंक बैलेंस कुछ भी कहता हो।

और चौथा, बेटा — इलाज। जो शख़्स सच मुच मौत को याद रखता हो, वो अपनी शामें पैसा गिनते और पड़ोसियों का मज़ाक़ उड़ाते नहीं गुज़ार सकता। यह सूरह इन दोनों बीमारियों को साथ रखती है क्योंकि दोनों की जड़ एक है: यह भूल जाना कि यह सब

आरिज़ी है।

इस सूरह से क्या सीखा

1. ज़ुबान और आँख के गुनाह पर आसमान से 'ख़राबी' का एलान हुआ — अल्लाह इंसान की इज़्ज़त को भारी तोलते हैं।

2. यह सूरह एक बार की फिसलन का नहीं, आदत का नाम ले रही है — देखिए आपका मज़ाक़ किस चीज़ पर खड़ा है।

3. दौलत एक तराज़ू बन जाती है: जब वो क़ीमत नापने लगे, तो आस पास के सब लोग छोटे दिखने लगते हैं।

4. कोई नहीं कहता 'मैं हमेशा जिऊँगा' — मगर बहुत लोगों की डायरी इसी हिसाब से लिखी होती है।

5. सज़ा जुर्म से मिलती हुई है: आबरू चूर करने वाले को चूर करने वाली में डाला जाता है।

6. आग का दिलों तक पहुँचना बयान किया गया — क्योंकि हक़ारत और लालच वहीं पैदा हुई थी।

7. दोनों बीमारियों का एक ही इलाज है: मौत की सच्ची याद।

या अल्लाह, हमारी ज़ुबानें लोगों की इज़्ज़त से महफ़ूज़ रखिए, हमारे दिलों को हक़ारत से पाक कर दीजिए, और हमें हुतमा से बचाइए। आमीन।